Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

जनजाति पर्यटन में विविधता एवं सतत् विकास के प्रमुख आयामों का भौगोलिक विश्लेषण (मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में)

डॉ. अजय तिवारी
भूगोल विभाग, शास.मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी
महिला महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)
Email: drajay225@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180309
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 45-50
March- 2026
Submitted: 15 Feb. 2026
Revised: 25 Feb. 2026
Accepted: 10 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश

मध्यप्रदेश भारत का एक प्रमुख जनजातीय राज्य है, जहाँ कुल जनसंख्या का लगभग एक–पाँचवाँ भाग जनजातीय समुदायों से सम्बधित है। यह राज्य अपनी समृद्ध जनजातीय संस्कृति, विविध भौगोलिक संरचना तथा प्राकृतिक संसाधनों के कारण जनजाति पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ रखता है। मध्यप्रदेश भारत के उन प्रमुख राज्यों में से है जहाँ जनजातीय जनसंख्या, सांस्कृतिक विविधता एवं प्राकृतिक संसाधनों का व्यापक समन्वय देखने को मिलता है। राज्य की लगभग 21.1 प्रतिशत जनसंख्या विभिन्न जनजातियों से सम्बधित है, जो इसे एक नृवंशविज्ञान संग्रहालय बनाती है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि जनजाति पर्यटन को समुदाय–आधारित एवं पर्यावरण–संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ विकसित किया जाए, तो यह न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि जनजातीय संस्कृति और पारिस्थितिकी संरक्षण में भी सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण करना है, जिसके अन्तर्गत जनजातीय बहुल क्षेत्रों का भौगोलिक वितरण, जनजातीय संस्कृति पर आधारित पर्यटन स्वरूप, सामाजिक–आर्थिक प्रभाव, सम्भावनाएँ एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि समुदाय आधारित पर्यटन के माध्यम से न केवल जनजातीय समुदायों का आर्थिक उत्थान सम्भव है, बल्कि यह उनकी लुप्त होती संस्कृति के संरक्षण का प्रभावी उपकरण भी है।

कुंजी शब्द: *जनजाति पर्यटन, भौगोलिक विविधता, सतत् विकास, सामाजिक–आर्थिक प्रभाव, जनजातीय संस्कृति ।*

प्रस्तावना

पर्यटन आधुनिक समय में केवल मनोरंजन या अवकाश का साधन न होकर सामाजिक–आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा क्षेत्रीय संतुलन का एक प्रभावी उपकरण बन चुका है। पर्यटन के विविध रूपों में **''जनजाति पर्यटन''** एक ऐसा विशिष्ट आयाम है, जो परम्परागत जनजातीय समाज, उनकी संस्कृति, जीवन–पद्धति और प्राकृतिक परिवेश को पर्यटन अनुभव से जोड़ता है। यह पर्यटन केवल आगंतुकों को सांस्कृतिक समृद्धि का सजीव अनुभव प्रदान करता है, बल्कि जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका, पहचान और सशक्तिकरण का माध्यम भी बनता है।

मध्यप्रदेश को **''भारत का जनजातीय हृदय प्रदेश''** कहा जाना इस दृष्टि से अत्यंत सार्थक है कि यहाँ देश की प्रमुख जनजातियाँ जैसे कि भील, गोंड, बैगा, कोरकू, सहरिया, कोल आदि बड़ी संख्या में निवास करती हैं। जनगणना आँकड़ों के अनुसार राज्य की लगभग एक–पाँचवाँ जनसंख्या जनजातीय समुदायों से सम्बधित है। ये जनजातियाँ सदियों से वनों, पर्वतों, पठारों और नदी घाटियों से जुड़ी हुई हैं तथा उनकी संस्कृति, लोककला, पर्व–त्योहार, पारम्परिक ज्ञान और सामाजिक संरचना अत्यंत समृद्ध एवं विविधतापूर्ण है।

भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रदेश में सतपुड़ा और विंध्य पर्वत श्रृंखलाएँ, मालवा और बुंदेलखण्ड के पठार, महाकौशल का वनांचल तथा विस्तृत नदी प्रणालियाँ पाई जाती हैं। यह **''भौगोलिक विविधता''** जनजातीय समाज की जीवन–शैली, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को गहराई से प्रभावित करती है। इसी कारण राज्य में जनजाति पर्यटन के विकास की व्यापक सम्भावनाएँ विद्यमान हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.अजय तिवारी, भूगोल विभाग, शास.मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय जबलपुर (म. प्र.)

How to cite this article:
तिवारी, . अजय. (2026). जनजाति पर्यटन में विविधता एवं सतत् विकास के प्रमुख आयामों का भौगोलिक विश्लेषण. Journal of Research & Development, 18(3(A)), 45–50. https://doi.org/10.5281/zenodo.19607055

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19607055
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

वर्तमान वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के दौर में जनजातीय समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे– संस्कृतिक अपक्षय, आर्थिक पिछड़ापन और पारम्परिक ज्ञान का लोप। ऐसे सन्दर्भ में जनजाति पर्यटन को यदि **''नृवंशविज्ञानिक संवेदनशीलता'', ''स्थानीय सहभागिता''** और **''सतत् विकास''** के सिद्धांतों के आधार पर विकसित किया जाए, तो यह जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के साथ–साथ क्षेत्रीय विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है।

इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण करना है, जिसमें सांस्कृतिक नृवंशविज्ञान, भौगोलिक विविधता तथा सतत् विकास के आयामों का समग्र विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीति–निर्माण एवं व्यवहारिक पर्यटन विकास के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। पर्यटन आधुनिक विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है। 21वीं सदी में पर्यटन अब केवल स्थलों के दर्शन तक सीमित न रहकर अनुभव की खोज बन चुका है। आधुनिक पर्यटक प्रकृति और संस्कृति के उन मूल स्वरूपों को देखना चाहता है जो वैश्वीकरण की चकाचौंध से दूर हैं। इसी सन्दर्भ में जनजाति पर्यटन एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में उभरा है।

मध्यप्रदेश का कुल क्षेत्रफल लगभग 3.08.252 वर्ग किलोमीटर है। यह राज्य भौगोलिक दृष्टि से पठारी भू–आकृति, पर्वत मालाओं और विस्तृत वन क्षेत्रों से समृद्ध है। मध्यप्रदेश, जिसे भारत का 'हृदय प्रदेश' कहा जाता है, जनजातीय दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ भील, गोंड, बैगा, कोरकू, सहरिया, भारिया जैसी अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। इन जनजातियों का जीवन वन, भूमि एवं प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। पर्यटन भूगोल की दृष्टि से यह शोध–पत्र इस बात का अन्वेषण करता है कि कैसे राज्य की विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों सतपुड़ा, विंध्य, मालवा और चम्बल जनजाति पर्यटन की सम्भावनाएँ भिन्न–भिन्न रूपों में विकसित हो सकती हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश राज्य को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है, जो भारत के मध्य भाग में स्थित होने के कारण भारत का हृदय प्रदेश कहलाता है। भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रदेश का अक्षांशीय विस्तार 21°04′ उत्तरी अक्षांश से 26°52′ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार 74°02′ पूर्वी देशांतर से 82°49′ पूर्वी देशांतर तक फैला हुआ है। राज्य का कुल क्षेत्रफल लगभग 3.08.252 वर्ग किलोमीटर है, जो इसे भारत के बड़े राज्यों में सम्मिलित करता है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में महाराष्ट्र, पूर्व में छत्तीसगढ़ तथा पश्चिम में राजस्थान और गुजरात स्थित हैं।

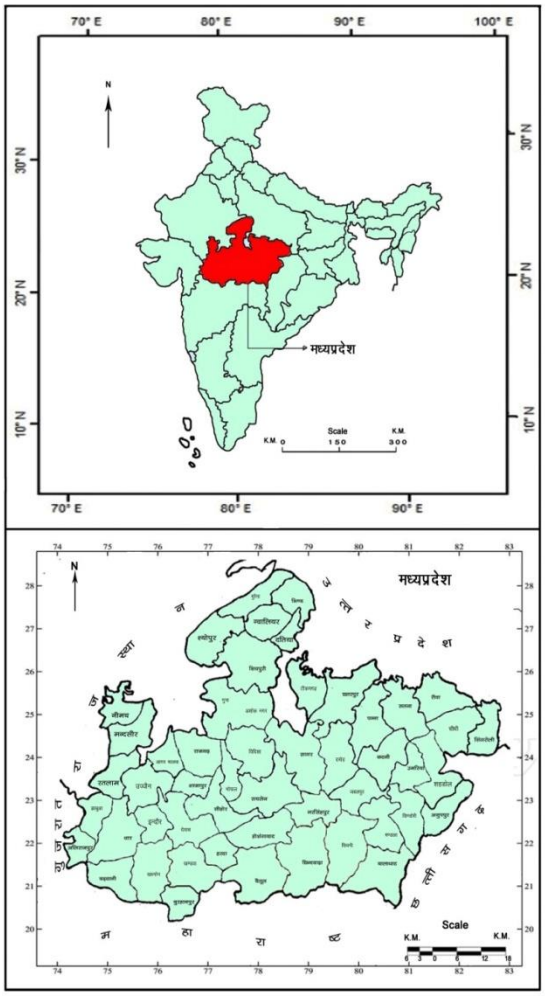

मध्य प्रदेश की भौगोलिक संरचना में सतपुड़ा एवं विंध्य पर्वत श्रृंखलाएँ, मालवा एवं बुंदेलखण्ड के पठार, महाकौशल का वनांचल तथा विस्तृत नदी प्रणालियाँ सम्मिलित हैं, जो जनजातीय जीवन और पर्यटन गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। सतपुड़ा क्षेत्र लगभग 21° से 22° उत्तरी अक्षांश तथा 77° से 79° पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है, जहाँ गोंड और कोरकू जनजातियाँ निवास करती हैं। विंध्य क्षेत्र 23° से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 78° से 81° पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है, जहाँ कोल एवं सहरिया जनजातियों की सघन उपस्थिति पाई जाती है।

इसी प्रकार महाकौशल क्षेत्र 22° से 24° उत्तरी अक्षांश तथा 79° से 81° पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है, जो बैगा जनजाति और वन–आधारित जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध है, जबकि मालवा पठार 22° से 24° उत्तरी अक्षांश तथा 74° से 76° पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है, जहाँ भील जनजाति का प्रभाव क्षेत्र पाया जाता है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र 24° से 26° उत्तरी अक्षांश तथा 78° से 80° पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है यहाँ सहरिया जनजाति की सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है।

शोध विधि

शोध मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों जनजातीय कार्य मंत्रालय की रिपोर्ट और प्राथमिक आंकड़ो पर आधारित है। अध्ययन में वर्णात्मक, विश्लेषणात्मक एवं प्रादेशिक दृष्टिकोण अपनाया गया है ताकि प्रत्येक जनजाति क्षेत्र की विशिष्ट पर्यटन क्षमता का आकलन किया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

- मध्यप्रदेश में जनजातीय पर्यटन के प्रदेशिक स्वरूप का अध्ययन।
- जनजाति पर्यटन की वर्तमान स्थिति एवं सम्भावनाओं का अध्ययन ।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

शोध प्रश्न

- मध्यप्रदेश की भौगोलिक विविधता पर्वत, पठार, वन एवं नदी प्रणालियाँ जनजाति पर्यटन के प्रदेशिक वितरण को किस प्रकार प्रभावित करती है?
- मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन की वर्तमान स्थिति क्या है तथा इसके विकास में प्रमुख अवसर एवं सीमाएँ कौन–सी हैं?

मध्यप्रदेश की जनजातीय संरचना

मध्यप्रदेश में भारत की कुल जनजातीय जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत निवास करता है। यहाँ की जनजातीय विविधता को समझने के लिए निम्नलिखित तालिका अत्यंत महत्वपूर्ण है–

तालिका–1
प्रमुख जनजातियाँ और उनके भौगोलिक क्लस्टर

जनजाति	मुख्य सघनता (जिले)	सांस्कृतिक विशेषता	भौगोलिक विशेषता
भील	झाबुआ, धार, अलीराजपुर	पिथोरापेंटिंग, भगोरिया उत्सव	अरावली–विंध्य का मिलन
गोंड	मण्डला, डिण्डोरी, छिंदवाड़ा	गोंड आर्ट, करमा नृत्य	सतपुड़ा–मैकल श्रेणी
बैगा	डिण्डोरी, अनूपपुर, बालाघाट	गोदना (टैटू), औषधि ज्ञान	मैकाल पर्वतमाला
भारिया	छिंदवाड़ा (पातालकोट)	आदिम जीवन शैली	1500 फीट गहरी घाटी
सहरिया	श्योपुर, मुरैना, ग्वालियर	लकड़ी की नक्काशी	चम्बल अर्ध–शुष्क पठार

स्रोत– भारत की जनगणना 2011

1. पश्चिमी क्षेत्र– भील–भिलाला सांस्कृतिक गलियारा

यह प्रदेश उत्सव पर्यटन का वैश्विक केंद्र है।

भगोरिया हाट– शोध दर्शाता है कि भगोरिया केवल विवाह मेला नहीं है, बल्कि यह भील समुदायों की वस्तु–विनिमय और सामाजिक न्याय प्रणाली का केन्द्र है। पिछले दशक में यहाँ विदेशी पर्यटकों की भागीदारी में 25% की वृद्धि दर्ज की गई है।

पिथोरा भित्ति चित्र– यह एक अनुष्ठानिक कला है जो अब अन्तर्राष्ट्रीय कला दीर्घा का हिस्सा बन चुकी है।

कलिनरी पर्यटन– झाबुआ का कड़कनाथ चिकन जिसे भौगौलिक संकेतक प्राप्त है और स्थानीय जनजातीय भोजन पानिया, मक्का रबडी खान–पान पर्यटन का नया आधार बन रहे हैं।

2. दक्षिण मध्य क्षेत्र– सतपुड़ा और भारिया औषधीय पर्यटन

सतपुड़ा की पर्वतमालाएँ जैव–विविधता का केंद्र हैं।

पातालकोट– यह क्षेत्र धरातल से 1500 फीट नीचे स्थित है। यहाँ की भारिया जनजाति को जड़ी–बूटियों का अद्वितीय ज्ञान है। शोध का सुझाव है कि यहाँ **नृजाति चिकित्सा केन्द्र** स्थापित कर **"वनस्पितिक पर्यटन"** को वैश्विक स्तर पर प्रचारित किया जाना चाहिए।

साहसिक पर्यटन – पातालकोट और तामिया क्षेत्र में ट्रेकिंग और पारस्थितिक शिविर की अपार सम्भावनाएं हैं।

3. पूर्वी क्षेत्र – बैगाचक और गोंडवाना विरासत

बैगा जनजाति प्रकृति के पुत्र – बैगा महिलाएं शरीर पर जटिल गोदना बनवाती हैं, जो उनके जीवन चक्र का इतिहास है। यह नृवंशविज्ञान पर्यटन का प्रमुख आकर्षण है।

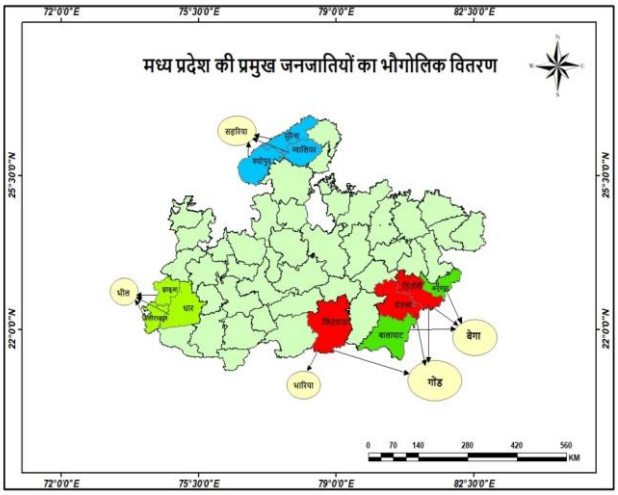

पिथौरा पेन्टिग

भगोरिया उत्सव

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

गोंड कला ग्राम– डिण्डोरी का पाटनगढ़ गाँव एक जीवित आर्ट गैलरी है, जहाँ के हर घर की दीवारों पर गोंड चित्रकारी देखने को मिलती हैं। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के निकट होने के कारण यहाँ पारिस्थितिक जनजातीय परिपथ अत्यंत सफल है।

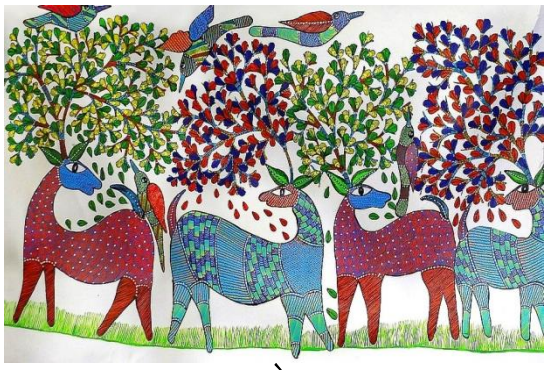

गोड़ कला

करमा नृत्य

गोदना कला

जड़ी–बूटी

आदिम जीवन शैली

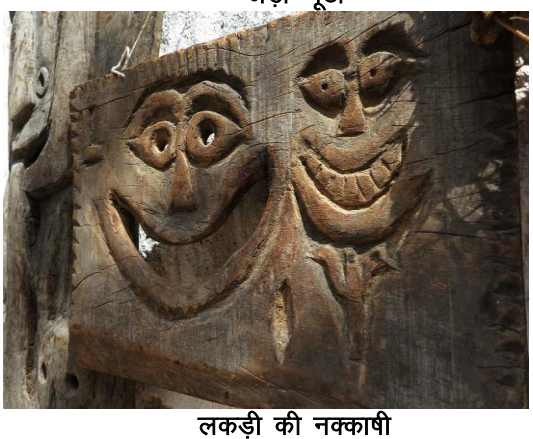

लकड़ी की नक्काषी

जनजाति पर्यटन का आर्थिक आधार हस्तशिल्प है। ढोकरा कला बैतूल और काष्ठ कला श्योपुर के माध्यम से स्थानीय शिल्पकारों को वैश्विक बाजार मिल रहा है। मिलेट पर्यटन कोदो–कुटकी के माध्यम से जनजातीय कृषि उत्पादों को भी पर्यटन से जोड़ा जा रहा है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ हो रही है।

सामाजिक–आर्थिक प्रभाव एवं चुनौतियां

1. सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

जनजाति पर्यटन ने मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर बहुआयामी प्रभाव डाला है। आर्थिक दृष्टि से यह स्थानीय जनजातीय समुदायों के लिए रोजगार एवं आय के नए अवसर सृजित करता है, विशेषकर हस्तशिल्प, लोककला, पारम्परिक नृत्य–संगीत, होम स्टे, स्थानीय मार्गदर्शक तथा हाट–पर्यटन के माध्यम से जनजातीय परिवारों की आय में वृद्धि होती है और उनकी आजीविका के पारम्परिक साधनों को नया बाजार मिलता है।

सामाजिक दृष्टि से जनजाति पर्यटन ने जनजातीय समुदायों में सांस्कृतिक चेतना और आत्मसम्मान को सुदृढ़ किया है। अपनी परम्पराओं, पर्व–त्योहारों और लोककला को बाहरी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने से जनजातीय पहचान को नई मान्यता प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त, पर्यटन गतिविधियों में महिलाओं एवं युवाओं की भागीदारी बढ़ने से सामाजिक सशक्तिकरण को भी प्रोत्साहन मिला है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

हालाँकि, शिक्षा, स्वास्थ्य और अवसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास में भी पर्यटन का अप्रत्यक्ष योगदान देखा जा सकता है, क्योंकि पर्यटन विकास के साथ सड़क, संचार और मूलभूत सेवाओं का विस्तार होता है।

2. जनजाति पर्यटन से सम्बधित चुनौतियाँ

जहाँ एक ओर जनजाति पर्यटन सामाजिक–आर्थिक विकास का साधन है, वहीं दूसरी ओर इससे जुड़ी कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। पर्यटन के अत्यधिक व्यवसायीकरण से जनजातीय संस्कृति के अपक्षय और परम्पराओं के कृत्रिम प्रदर्शन का खतरा उत्पन्न हो रहा है। कई बार बाहरी एजेंसियों के हस्तक्षेप के कारण स्थानीय समुदायों की वास्तविक भागीदारी सीमित रह जाती है, जिससे आर्थिक लाभ समान रूप से वितरित नहीं हो पाता।

आर्थिक चुनौतियों में अपर्याप्त अवसंरचना, प्रशिक्षण की कमी और विपणन सुविधाओं का अभाव प्रमुख हैं। अधिकांश जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन से सम्बधित कौशल विकास की सुविधाएँ सीमित हैं, जिससे स्थानीय लोग पर्यटन उद्योग में पूरी तरह शामिल नहीं हो पाते।

सामाजिक स्तर पर बाहरी सम्पर्क बढ़ने से सामाजिक असंतुलन, पारम्परिक मूल्यों में परिवर्तन और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का प्रभाव भी देखा जा सकता है। इसके साथ ही पर्यावरणीय दबाव, जैसे की वन संसाधनों पर बढ़ता भार और कचरा प्रबंधन की समस्या, जनजाति पर्यटन की एक गम्भीर चुनौती बनकर उभरती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव सकारात्मक हैं, किन्तु उनसे जुड़ी चुनौतियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि जनजाति पर्यटन को समुदाय–आधारित, नृवंशविज्ञानिक रूप से संवेदनशील एवं सतत् विकास के सिद्धांतों के अनुरूप विकसित किया जाए, तो यह जनजातीय समाज के समावेशी और सन्तुलित विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है।

तालिका –2
पर्यटन प्रभाव आव्यूह (मैट्रिक्स)

आयाम	सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक जोखिम
वित्तीय	रोजगार सृजन, आय में 40% तक वृद्धि	बिचौलियों का हस्तक्षेप
सांस्कृतिक	परम्पराओं का संरक्षण एवं गौरव	सांस्कृतिक वस्तुकरण
सामाजिक	महिला सशक्तिकरण, शिक्षा का प्रसार	निजता का हनन
पर्यावरण	प्राकृतिक संसाधनों के प्रति चेतना	प्लास्टिक कचरा एवं प्रदूषण

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सम्भावनाएँ–

मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन की सम्भावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं, क्योंकि राज्य में जनजातीय जनसंख्या की बहुलता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा विविध भौगोलिक संरचना विद्यमान है। यहाँ की जनजातियाँ अपनी विशिष्ट जीवनशैली, लोककला, नृत्य–संगीत, पर्व–त्योहार और पारम्परिक ज्ञान के कारण पर्यटकों को आकर्षित करने की पर्याप्त क्षमता रखती हैं। सतपुड़ा, विंध्य और महाकौशल जैसे वन एवं पर्वतीय क्षेत्रों में जनजातीय संस्कृति का सजीव अनुभव पर्यटन को विशेष पहचान प्रदान कर सकता है।

- आर्थिक दृष्टि से जनजाति पर्यटन के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, हस्तशिल्प एवं लोकउत्पादों के विपणन तथा आय के वैकल्पिक स्रोतों का विकास सम्भव है। होम–स्टे, जनजातीय हाट, सांस्कृतिक उत्सव और स्थानीय मार्गदर्शक जैसी गतिविधियाँ जनजातीय समुदायों की आजीविका को सुदृढ बना सकती हैं। इससे पलायन की समस्या में भी कमी आ सकती है।
- सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर जनजाति पर्यटन जनजातीय पहचान, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करने की क्षमता रखता है। बाहरी दुनिया के साथ नियंत्रित सम्पर्क से पारम्परिक ज्ञान, लोककला और परम्पराओं का दस्तावेजीकरण एवं संरक्षण सम्भव हो सकता है। साथ ही महिलाओं और युवाओं की सहभागिता बढ़ाकर सामाजिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दिया जा सकता है।
- पर्यावरणीय दृष्टि से यदि जनजाति पर्यटन को पारिस्थितिक पर्यटन और सतत् विकास के सिद्धांतों के अनुरूप विकसित किया जाए, तो यह वनों, जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन न केवल पर्यटन विकास की एक महत्वपूर्ण सम्भावना है, बल्कि यह समावेशी, संतुलित और सतत् क्षेत्रीय विकास का प्रभावी साधन भी बन सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन एक बहुआयामी विकास साधन के रूप में उभरने की व्यापक क्षमता रखता है। राज्य की समृद्ध जनजातीय संस्कृति, विविध नृवंशविज्ञानिक विशेषताएँ तथा पर्वतीय, वन और पठारी भौगोलिक संरचना जनजाति पर्यटन के लिए अनुकूल आधार प्रदान करती हैं। भील, गोंड, बैगा, कोरकू, सहरिया जैसी जनजातियों की जीवन–पद्धति, लोककला, नृत्य–संगीत, पर्व–त्योहार और पारम्परिक ज्ञान पर्यटकों के लिए विशिष्ट आकर्षण का केंद्र है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि जनजाति पर्यटन के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, आय में वृद्धि तथा आजीविका के वैकल्पिक साधनों का विकास सम्भव है, जिससे जनजातीय समुदायों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

लाया जा सकता है। साथ ही यह पर्यटन जनजातीय पहचान, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण को भी प्रोत्साहित करता है।

हालाँकि, यह भी सत्य है कि जनजाति पर्यटन के विकास के साथ कुछ चुनौतियाँ जुड़ी हुई हैं, जैसे की अत्यधिक व्यवसायीकरण, सांस्कृतिक अपक्षय, पर्यावरणीय दबाव तथा स्थानीय समुदायों की सीमित भागीदारी। यदि इन चुनौतियों की उपेक्षा की गई, तो पर्यटन का उद्देश्य प्रभावित हो सकता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्यप्रदेश में जनजाति पर्यटन को समुदाय–आधारित, नृवंशविज्ञानिक रूप से संवेदनशील एवं सतत् विकास के सिद्धांतों के अनुरूप विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। स्थानीय जनजातीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान के साथ विकसित किया गया जनजाति पर्यटन राज्य के समावेशी एवं संतुलित विकास की दिशा में एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. सिंह, के. एस. (2002): भारत की जनजातियाँ, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. शर्मा, आर.के. एन.एस. (2015): भारतीय जनजातीय समाजः संरचना और परिवर्तन। नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन्स।
3. भारत सरकार. (2011): भारत की जनगणना 2011: मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति आँकडे. नई दिल्ली, भारत सरकार प्रकाशन ।
4. मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम. (2019): मध्यप्रदेश पर्यटन वार्षिक प्रतिवेदन. भोपाल, म.प्र. पर्यटन विभाग।
5. वर्मा, एस. पी. (2014): पर्यटन भूगोल. प्रयागराज, हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. पाण्डेय, डी. के. (2018): सतत् विकास और पर्यटन. नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
7. यादव, आर. के. (2016): नृवंशविज्ञानः सिद्धांत एवं प्रयोग. चौखंबा प्रकाशन वाराणसी, ।
8. संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन (2017): सतत् पर्यटन विकासः सिद्धांत एवं व्यवहार (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली, संयुक्त राष्ट्र सूचना केंद्र।